بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 23
Issue - 12

राह-ए-ईमान

दिसम्बर
2021 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (तजल्लियात-ए-इलाहिया अर्थात ख़ुदा की चमकारें).....4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 19-11-2021).....8
7. क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर.....12
8. कुछ अज्ञानियों द्वारा किए गए ऐतराज़ों के उत्तर.....20
9. सिलसिला अहमदिया भाग-30.....22
10. वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है.....24
11. मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन.....26
12. सामान्य ज्ञान.....28

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

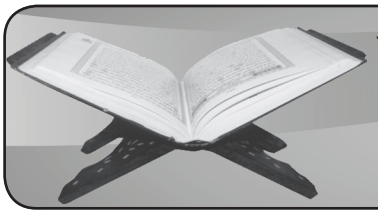

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝ (सूरह अल हुजुरात आयत- 49)

अनुवाद:- हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम्हारे पास अगर कोई बदकिर्दार (दुराचारी) कोई ख़बर लाए तो (उस की) छानबीन कर लिया करो, ऐसा न हो कि तुम अज्ञानतावश किसी क़ौम को नुक़्सान पहुंचा बैठो फिर तुम्हें अपने किए पर लज्जित (शर्मिंदा) होना पड़े।

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद:- हज़रत हफस बिन आसिम बताते हैं कि मैं अपने चाचा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के साथ मक्का के सफर में था। रास्ते में उन्होंने नमाज़ ज़ुहर दो रकअत पढ़ाई इस के बाद वह अपने नि वास स्थान पर आए और बैठ गए हम भी आपके साथ आकर बैठ गए। आप ने उस तरफ देखा जिधर नमाज़ पढ़ाई थी। आप ने देखा कि कुछ लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं। आप ने पूछा ये लोग क्या कर रहे हैं? मैंने कहा सुन्नतें पढ़ रहे हैं। आप ने फरमाया अगर सुन्नतें पढ़नी थीं तो मैं पूरी नमाज़ पढ़ाता। ए भतीजे! मैं रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सफर कर रहा हूँ आप ने अपनी वफात तक सफर में दो रकअत फ़र्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी। मैं अबू बकर के साथ सफर में रहा हूँ उन्होंने भी कभी दो रकअत फर्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी जब तक वे फौत हो गए। उमर के साथ सफर कर रहा हूँ आप भी अपनी वफात तक कभी दो रकअत फर्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी। फिर उसमान के साथ सफर पर रहा हूँ उन्होंने भी अपनी वफात तक इसी पर अमल किया। अल्लाह तआला का इरशाद है कि तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के व्यवहार में अच्छा नमूना है। (और यही सुन्नत है जो हर मुसलमान को पालन करना चाहिए।) (मुस्लिम किताबुस्सलात)

☆ ☆ ☆

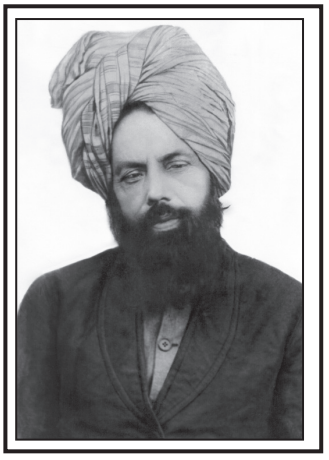

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

बैअत के मग़्ज़ (सार) को अपनाओ

यह मत सोचो कि केवल बैअत कर लेने से ही ख़ुदा राज़ी हो जाता है। यह तो केवल छिलका है। मग़्ज तो इसके अंदर है। प्राय: क़ानून-ए-क़ुदरत यही है कि एक छिलका होता है और मग़्ज़ उसके अंदर होता है। छिलका कोई काम की चीज़ नहीं है मग़्ज़ लिया जाता है। कुछ ऐसे होते हैं कि उनमें मग़्ज़ रहता ही नहीं और मुर्ग़ी के हवाई अंडों की तरह जिनमें न ज़र्दी होती है न ही सफेदी। जो किसी काम नहीं आ सकते और रद्दी की तरह फेंक दिए जाते हैं। हां एक-दो मिनट तक किसी बच्चे के खेल का साधन हो तो हो।

इसी तरह पर वह इन्सान जो बैअत और ईमान का दावा करता है। यदि वह इन दोनों बातों का मग़्ज़ अपने अंदर नहीं रखता तो उसे डरना चाहिए कि एक समय आता है कि वह उस हवाई अंडे की तरह थोड़ी ठोकर से चकनाचूर होकर फेंक दिया जावेगा।

इसी तरह जो बैअत और ईमान का दावा करता है उसको टटोलना चाहिए कि क्या मैं छिलका ही हूं या मग़्ज़? जब तक मग़्ज़ पैदा न हो ईमान, मोहब्बत, आज्ञापालन, बैअत, श्रद्धा और शिष्य और इस्लाम का दावेदार सच्चा दावेदार नहीं है। याद रखो कि यह सच्ची बात है कि अल्लाह तआला के पास मग़्ज़ के अतिरिक्त छिलके का कोई महत्व नहीं। अच्छी तरह याद रखो कि पता नहीं मौत कब आ जाए। लेकिन यह पक्की बात है कि मरना अवश्य है। इसलिए कोरे दावे को पर्याप्त न समझो और इसी पर ख़ुश न हो जाओ वह कदापि फायदेमंद चीज़ नहीं जब तकइन्सान अपने आप को बहुत मौतों पर न डाले और बहुत से बदलावहं और परिवर्तनों में से होकर न निकले, वह मानवता के असल मक़सद को नहीं पा सकता।

इन्सान की हक़ीक़त :

इन्सान वस्तुत: "उन्सान" से बना है अर्थात् जिसमें दो सच्चे प्रेम हों। एक अल्लाह तआला से दूसरा मानव जाति की हमदर्दी से। जब यह दोनों प्रेम उसमें पैदा हो जावें उस समय वह इन्सान कहलाता है। और यही वह बात है जो इंसानियत का मग़्ज़ कहलाती है। और इसी स्थान पर इन्सान बुद्धिमान कहलाता है। जब तक यह नहीं कुछ भी नहीं। हज़ार दावा करो और दिखाओ लेकिन अल्लाह तआला और उसके नबी और फ़रिश्तों के निकट व्यर्थ है। (मलफूज़ात जिल्द - 2)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन

तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसको स्वीकार नहीं किया

लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली हमलों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।

पांच भूकम्पों के आने के बारे में ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी जिसके शब्द ये हैं

"चमक दिखलाऊंगा तुम को इस निशां की पंज बार"

ख़ुदा की इस वह्यी का मतलब यह है कि ख़ुदा फ़रमाता है कि केवल इस ख़ाकसार की सच्चाई पर गवाही देने के लिए और केवल इस उद्देश्य से ताकि लोग समझ सकें कि मैं उसकी ओर से हूं पांच भयंकर भूकम्प एक दूसरे के बाद कुछ-कुछ अन्तराल से आएंगे ताकि वे मेरी सच्चाई की गवाही दें और उनमें से प्रत्येक में ऐसी चमक होगी कि उस के देखने से ख़ुदा याद आ जाएगा और हृदयों पर उनका एक भयानक प्रभाव पड़ेगा और वे अपनी शक्ति, तीव्रता और क्षति पहुंचाने में असाधारण होंगे जिन के देखने से मनुष्य के होश जाते रहेंगे। यह सब ख़ुदा का स्वाभिमान करेगा, क्यों कि लोगों ने समय को नहीं पहचाना। और ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं गुप्त था अब मैं स्वयं को प्रकट करूंगा और मैं अपनी चमकार दिखाऊंगा तथा अपने बन्दों को छुटकारा दूंगा उसी प्रकार जिस प्रकार फ़िरऔन के हाथ से मूसा नबी और उसकी जमाअत को छुटकारा दिया गया। और ये चमत्कार उसी प्रकार प्रकट होंगे जिस प्रकार मूसा ने फ़िरऔन के सामने दिखलाए। और ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं सच्चे और झूठे में अन्तर करके दिखलाऊंगा तथा मैं उसे सहायता दूंगा जो मेरी ओर से है और मैं उसका विरोधी हो जाऊंगा जो उसका विरोधी है।[1] ★

अत: हे सुनने वालो! तुम सब स्मरण रखो कि यदि ये भविष्यवाणी केवल साधारण तौर पर प्रकटन में आईं तो समझ लो कि मैं ख़ुदा की ओर से नहीं हूं परन्तु यदि इस भविष्यवाणी ने अपने पूर्ण होने के समय संसार में एक तहलका मचा दिया और घबराहट की तीव्रता से पागल सा बना दिया तथा अधिकतर स्थानों में इमारतों और प्राणों को क्षति पहुंचाई तो तुम उस ख़ुदा से डरो जिसने मेरे लिए यह सब कुछ कर दिखाया। वह ख़ुदा जिसके क़ब्ज़े में कण-कण है उस से मनुष्य कहां भाग सकता है। वह फ़रमाता है कि मैं चोरों की तरह छुप कर आऊंगा। अर्थात् किसी ज्योतिषी या मुल्हम या स्वप्न दृष्टा को उस समय की ख़बर नहीं दी जाएगी सिवाए इतनी ख़बर के जो उसने अपने मसीह मौऊद को दे दी या भविष्य में इस

★**हाशिया :-** थोड़ी ऊंघ की अवस्था में ख़ुदा तआला ने एक काग़ज़ पर लिखा हुआ मुझे यह दिखाया- تلك ايات الكتاب المبين अर्थात् पवित्र क़ुर्आन की सच्चाई पर में ये निशान होंगे। इसी से

पर कुछ अधिक करे। इन निशानों के बाद संसार में एक परिवर्तन पैदा होगा और अधिकतर हृदय ख़ुदा की ओर खींचे जाएंगे और प्राय: नेक दिलों पर संसार का प्रेम ठण्डा हो जाएगा और मध्य से लापरवाही के पर्दे उठा दिए जाएंगे और उन्हें वास्तविक इस्लाम का शर्बत पिलाया जाएगा जैसा कि ख़ुदा तआला स्वयं फ़रमाता है - چودور خسروی آغاز کردند مسلماں را مسلماں باز کردند

(अनुवाद- जब हमारा शाही ज़माना आरंभ हुआ तो मुसलमानों को दोबारा से मुसलमान किया गया अनुवादक) दौरे खुसरवी से अभिप्राय इस ख़ाकसार का दावत-काल है। परन्तु यहां संसार की बादशाहत अभिप्राय नहीं अपितु आकाशीय बादशाहत अभिप्राय है जो मुझ को दी गई। इस इल्हाम का ख़ुलासा अर्थ यह है कि जब दौरे खुसरवी अर्थात् मसीही काल जो ख़ुदा के नज़दीक आकाशीय बादशाहत कहलाती है छठे हज़ार के अन्त में आरंभ हुआ जैसा कि ख़ुदा के पवित्र नबियों ने भविष्यवाणी की थी तो इसका यह प्रभाव हुआ कि वे जो केवल बाह्य तौर पर मुसलामन थे वास्तविक मुसलमान बनने लगे, जैसा कि अब तक चार लाख के लगभग बन चुके हैं, और मेरे लिए यह कृतज्ञ होने का स्थान है कि मेरे हाथ पर चार लाख लोगों ने अपने पापों, गुनाहों तथा शिर्क से तौब: की और हिन्दुओं तथा अंग्रेज़ों की भी एक जमाअत इस्लाम से सम्मानित हुई। अत: कल के दिन ही एक हिन्दू मेरे हाथ पर इस्लाम से सम्मानित हुआ जिसका नाम मुहम्मद इक़बाल रखा गया और मैं कल के दिन कई बार मैं इस ख़ुदा के इल्हाम को पढ़ रहा कि अचानक मेरी रूह में यह इबारत फूंकी गई जो पहले इल्हाम के बाद में है -

مقام او مبین از راہ تحقیر بدورانش رسولاں ناز کر دند

(अनुवाद- उसके स्तर को तिरस्कार की दृष्टि से न देख क्योंकि रसूलों ने उसके ज़माने पर गर्व किया है। अनुवादक)

ऐसा ही ख़ुदा तआला ने इस वह्यी में जो लिखी जाती है मेरे हाथ पर इस्लाम धर्म के फैलाने की खुशख़बरी दी जैसा कि उसने फ़रमाया- يَا قَمَرُ يا شَمْسُ اَنْتَ مِنِّی وَ اَنَا مِنْكَ

अर्थात् हे चन्द्रमा और हे सूर्य! तू मुझ से है और मैं तुझ से हूं। ख़ुदा की इस वह्यी में ख़ुदा तआला ने एक बार मुझे चन्द्रमा ठहराया और अपना नाम सूर्य रखा। इस से मतलब यह है कि जिस प्रकार चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य से लाभ प्राप्त और लाभान्वित होता है इसी प्रकार मेरा प्रकाश ख़ुदा तआला से लाभ प्राप्त और लाभान्वित है। फिर दूसरी बार ख़ुदा तआला ने अपना नाम चन्द्रमा रखा और मुझे सूर्य कहकर पुकारा इस से मतलब यह है कि वह जलाली (प्रतापी) प्रकाश मेरे माध्यम से प्रकट करेगा। वह गुप्त था अब मेरे हाथ से प्रकट करेगा। वह गुप्त था अब मेरे हाथ से प्रकट हो जाएगा और उसकी चमक से संसार अनभिज्ञ था परन्तु अब मेरे माध्यम से उसकी जलाली चमक संसार में चारों ओर फैल जाएगी। और जिस प्रकार तुम बिजली को देखते हो कि एक ओर से प्रकशित हो कर एक पल में आकाश की सम्पूर्ण सतह को प्रकाशित कर देती है। इसी प्रकार इस युग में भी होगा। ख़ुदा तआला मुझे सम्बोधित करके फ़रमाता है कि तेरे लिए मैं पृथ्वी पर उतरा और तेरे लिए मेरा नाम चमका तथा मैंने तुझे समस्त संसार के लिए चुन लिया। (तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें) पृष्ठ 1-4) **.....शेष**

सम्पादकीय

मुसलमान की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारियाँ

जमाअत अहमदिया के दूसरे खलीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब अपने एक भाषण में जो आप ने 11 सितम्बर 1927 ई. को शिमला में मुसलमानों के बीच दिया, मुसलमानों को अपनी व्यक्तिगत तथा क़ौमी ज़िम्मेदारियों की ओर तवज्जो दिलाई। मुसलमान चूंकि शिक्षा, व्यापार, सरकारी नौकरी इत्यादि क्षेत्रों में उस समय पिछड़े हुए थे और आज भी हालत कुछ खास अच्छी नहीं है, अत: आपके उसी भाषण में से कुछ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ। आप वर्णन करते हैं -

"जैसा कि आप सज्जनों ने विज्ञापन में पढ़ा होगा मेरा लेख मुसलमानों की व्यक्तिगत और क़ौमी ज़िम्मेदारियों के सम्बन्ध में है। यद्यपि मेरा लेख मुसलमानों की क़ौमी और व्यक्तिगत ज़िम्मेदारियों के सम्बन्ध में है किन्तु लेख इस प्रकार का है कि प्राकृतिक तौर पर दूसरी क़ौमों की चर्चा स्पष्टत: या सांकेतिक रूप से करनी पड़ती है। क़ौमी ज़िम्मेदारियाँ हमेशा इस उद्देश्य के लिए हुआ करती हैं कि एक क़ौम अपनी पड़ोसी क़ौम में इज़्ज़त और ख़ुशहाली, सामर्थ्य और समझदारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सके। और साथी क़ौमों में इज़्ज़त और समझदारी से ज़िन्दगी बिताने के सम्बन्ध में जब हम विचार करते हैं तो आवश्यक है कि हम उन सम्बन्धों पर विचार करें जो हमारे साथी क़ौमों से हैं। अत: इस स्थिति में अवश्य ही दूसरी क़ौमों के सम्बन्ध में हम को कुछ न कुछ कहना पड़ेगा चाहे सांकेतिक रूप से हो या कुछ जगह स्पष्टत:।

मुसलमान की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारियाँ

सबसे पहली चीज़ जिसकी मुसलमान को आवश्यकता है वह यह है कि मुसलमान को वास्तविक अर्थों में मुसलमान बनाया जाए। जब तक मुसलमान, मुसलमान नहीं बनता वह क़ौमी इमारत के अन्दर मज़बूत ईंट के तौर पर नहीं लग सकता। मुझे अफ़सोस से कहना पड़ता है कि सबसे पीछे या जिस का ख़ाना बिल्कुल ख़ाली है वह इस्लाम है। उसकी ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं।

कितनी अधिक दु:ख की स्थिति है अगर मुसलमानों में ढूंढा जाए तो सौ में से एक भी बड़ी मुश्किल से निकलेगा जो क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ सकता हो। और एक प्रतिशत भी नहीं जो इस्लाम की शिक्षा से परिचित हो। और एक व्यक्ति प्रति हज़ार में से भी न निकलेगा जो उन का पालन करता हो। फिर ऐसे व्यक्तियों से संयोजित जो क़ौम होगी वह क्या होगी? आख़िर क़ौम के कुछ अर्थ हैं। हिन्दू, हिन्दू कहलाता है। मुसलमान, मुसलमान कहलाता है क्यों हिन्दुस्तानी कहने से यह अर्थ पूरा नहीं होता। वास्तविकता यह है कि यह प्रतिष्ठित नाम धर्म और शिक्षा के कारण से हैं। हिन्दू कहता है कि उसके पास ऐसी शिक्षा है जो मुसलमान के पास नहीं। मुसलमान कहता है हमारे पास ऐसी शिक्षा है कि किसी दूसरे के पास नहीं। इसलिए हिन्दू या मुसलमान अलग-अलग नामों से पुकारे जाते हैं। अगर हम इस कारण से मुसलमान कहलाते हैं कि हमारी शिक्षा उच्च श्रेणी की है तो विचार करने योग्य यह विषय है कि कौन सी बात हम

में पाई जाती है और जब हम इस्लाम से जो क़ुर्आन करीम की शिक्षा है उस से अपरिचित हैं तो फिर किस चीज़ के लिए लड़ रहे हैं। आश्चर्य है उसे स्वयं घर से व्यवहारिक तौर पर निकाल दिया है। एक मिस्री लिखता है कि क़ुर्आन करीम ग्यारह जगह काम आता है इसके बारे में (1) ढ़क कर रखने के लिए (2) क़सम खाने के लिए और अन्तिम उपयोग यह है कि वह क़ुर्आन करीम जो एक व्यक्ति ने मुसलमान कहलाकर सारी ज़िन्दगी न खोला था मुल्ला आकर उसकी क़ब्र पर खोले।

मैं पूछता हूँ कि वह पुस्तक जो मार्गदर्शन के लिए आई थी, वह किताब जो अपने आमिल को अवश्य सफल कर देती है। वह पुस्तक जिसका आरम्भ ही फ़ातिहा से होता था जो खुली रहने की शिक्षा देती थी आज वह बन्द रहती है और हम उसे खोलकर भी नहीं देखते तो फिर क्या हक़ है कि दूसरों के घर जाकर प्रचार करें।

मैं तो अपने क़ुर्आन को ढ़क कर नहीं रखता कि यह बन्द रखने के बराबर है। खुला रखता हूँ कि क़ुर्आन करीम का असल सम्मान और बढ़ाई उसकी तिलावत, उस की समझ, उस पर अमल और फिर उसका प्रकाशन है। अत: सबसे पवित्र यही चीज़ है जिसकी मुसलमानों को आवश्यकता है। इसको बन्द नहीं खोलकर आँखों के सामने रखें इसे समझें और इसकी शिक्षा पर अमल करें। मैं फिर कहता हूँ कि क़ुर्आन शरीफ़ ढ़क कर रखने के लिए नहीं। मुझे तो कुछ यही कहेंगे कि मैं अपने क़ुर्आन को ढ़क कर नहीं रखता। (इस अवसर पर आप ने अपना क़ुर्आन मजीद हाथ में लेकर बार-बार दिखाया-इरफ़ानी) लेकिन यह विचार ग़लत है। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में तो वह चमड़े पर लिखा हुआ था। इस का वास्तविक और सच्चा सम्मान यही है कि पढ़ो और अभ्यास करो। मैं बड़े ज़ोर से कहता हूँ यदि मुसलमान इसके लिए तैयार नहीं तो इनका कोई अधिकार नहीं कि वह मुसलमान कहलाएं। उनके पास विकल्प है कि वह हिन्दुस्तानी कहलाएं या कुछ और।

<u>मुसलमान ध्यान दें</u>

मैं विशेषकर मुसलमानों को ध्यान दिलाता हूँ कि वह इस देश में थोड़े हैं। संख्या के अनुसार ही नहीं सम्पत्ति में भी बहुत कम हैं। धन ही नहीं शैक्षिक स्थिति में भी बहुत पीछे हैं। फिर शैक्षिक स्थिति में ही नहीं बल्कि वह उस भाग में भी बहुत पीछे हैं जो विकास का कारण होता है। अर्थात् गवर्नमेन्ट सर्विसेज़।

इन सभी बातों में ही नहीं बल्कि मैं यह कहते हुए शर्म और दु:ख महसूस करने के बावजूद भी कहूँगा कि वह इन्सानी हालत में भी पीछे हैं। उन का प्रशिक्षण नहीं, उन में व्यवस्था स्थापित नहीं। अत: ऐसी स्थिति में जबकि वह दूसरों से पीछे और बहुत पीछे हैं तो मैं पूछता हूँ कि वह बताएं कि कल उन का क्या हाल होगा।एक सम्मानित क़ौम की ज़िन्दगी तो अलग विषय है वह सोचें कि ऐसी स्थिति में क्या वह अपमानित होकर भी ज़िन्दगी गुज़ार सकेंगे। अत: इससे पहले कि मामला हद से गुज़र जाए और बीमारी लाइलाज हो जाए उठो क़ौमी और व्यक्तिक सुधार की चिंता करो वरना हालत अत्यधिक ख़तरनाक है।"

(मुसलमानों की व्यक्तिगत और क़ौमी ज़िम्मेदारियाँ)

अल्लाह तआला मुसलमानों को समझ दे और उनकी स्थिति को जल्द बेहतर करे। आमीन

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक-19.11. 2021 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय बदरी सहाबी हज़रत उमर बिन अल् खत्ताब रज़ीयल्लाहु अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- सहाबा रज़ीअल्लाहु अन्हुम की पहली अवस्था तथा इस्लाम क़बूल करने के बाद पैदा होने वाले इन्क़लाब का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु के इस्लाम क़बूल करने की घटना को उदाहरण के तौर पर बयान फ़रमाया है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी बहिन तथा बहनोई से क़ुर्आन करीम सुना तो रो पड़े और दौड़े दौड़े रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गए और निवेदन किया कि घर से निकला तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मारने के लिए तय्यार था किन्तु ख़ुद शिकार हो गया हूँ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि यही सहाबी थे जो पहले शराब पिया करते, आपस में लड़ा करते परन्तु जब उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वीकार किया और दीन के लिए साहस तथा कोशिश से काम लिया तो न केवल स्वयं उच्च श्रेणी के स्तर पर पहुंच गए बल्कि दूसरों को भी उच्च स्तर तक पहुंचाने का कारण हो गए।

हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु का अल्लाह की नाराज़गी से डरने के बारे में यह हाल था कि फ़रमाते- यदि फ़रात सागर के किनारे कोई बकरी भी मर गई तो मुझे डर है कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन मुझसे सवाल करेगा। हज़रत अनस रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना कि ऐ इब्ने ख़त्ताब! तू अवश्य ही अल्लाह से डर, अन्यथा वह अवश्य ही तुझे यातना देगा। आप रज़ी. की अंगूठी पर ये शब्द अंकित थे कि उपदेशक होने की दृष्टि से मौत काफ़ी

है। अब्दुल्लाह बिन शहज़ाद कहते हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की हिचकियाँ सुनीं तथा मैं अन्तिम पंक्ति में था, आप रज़ी. यह तिलावत कर रहे थे कि- "इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़नी इलल्लाह" अर्थात- मैं अपने दु:ख दर्द का केवल अल्लाह के समक्ष निवेदन करता हूँ। इस रिवायत को बयान करके हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अर्राबे रह. फ़रमाते हैं कि जो अल्लाह की स्तुति में लीन रहते हैं उनको ख़ुदा के अतिरिक्त किसी अन्य का दरबार मिलता ही नहीं जहाँ वे अपने कष्ट और दु:ख रोएँ तथा अपने सीनों के बोझ को हलका करें।

पुराने सेवा करने वालों तथा क़ुर्बानी करने वालों का आप रज़ी. इतना ध्यान रखते कि एक बार कुछ मूल्यवान ओढ़नियाँ आईं तो आप रज़ी. ने वे बाँट दीं और हज़रत उम्मे सलीत को यह कहते हुए उसका हक़दार कहा कि ओहद के दिन उम्मे सलीत हमारी मशकें उठा उठा कर लाती थीं। एक महिला ने अपने पति के देहान्त पर परेशानियों का वर्णन किया और बताया कि वह ख़फ़ाफ़ बिन ईमा गिफ़ारी की बेटी है जो हुदैबिया की सन्धि के समय हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मौजूद थे। यह सुन कर आप रज़ी. ठहर गए और फ़रमाया कि वाह वाह! बड़ा निकट का सम्बंध है, फिर एक मज़बूत ऊँट पर अनाज की बोरियाँ लादीं, साल भर के लिए माल और कपड़े रखे और ऊँट की नकेल उस महिला के हाथ में दी तथा फ़रमाया कि यह समाप्त नहीं होगा कि अल्लाह तुम्हें और देगा।

एक बार हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु रात के समय विभिन्न घरों में गए जहाँ हज़रत तलहा रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने आपको देख लिया। अगली सुबह हज़रत तलहा उन घरों में से एक घर में गए वहाँ एक बूढ़ी नेत्रहीन महिला थी जिसने हज़रत तलहा के पूछने पर बताया कि रात जो व्यक्ति मेरे घर आया वह लम्बी अवधि से मेरी सेवा कर रहा है और मेरे काम काज को ठीक करता है तथा मेरी गन्दगी दूर करता है।

हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु शाम देश से वापसी पर क़ाफ़ले से अलग होकर लोगों के हालात की जानकारी लेने के लिए निकले। दूर सुदूर इलाक़े के एक ख़ेमे में एक बूढ़ी महिला से उसका हाल पूछा तो उसने कहा कि ख़ुदा उमर को मेरे विषय में भलाई न दे, जब से वह ख़लीफ़: हुआ है मुझे उसकी ओर से कोई सहायता राशि नहीं मिली। हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि उमर को तेरे हालात की कैसे सूचना मिलेगी। उस महिला ने कहा- सुबहानल्लाह, मैं नहीं समझती कि कोई व्यक्ति लोगों पर अधिकारी बन जाए तथा उसे यह ख़बर न हो कि उसके पूरब और पश्चिम में क्या है। हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु यह सुन कर रो पड़े और फ़रमाने लगे कि हाए हाए उमर! कितने दावेदार होंगे, हर एक तुझसे अधिक दीन की समझ रखने वाला है। फिर आप रज़ी. ने उस महिला से कहा कि तू अपनी कष्टदायक स्थिति को कितने में बेचती है कि मैं उमर को नर्क से बचाना चाहता हूँ। उस महिला ने पहले तो इसे मज़ाक़ समझा फिर पच्चीस दीनार स्वीकार कर लिए, इसी बीच हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु वहाँ दाखिल हुए और हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को अमीरुलमोमिनीन कह कर सम्बोधित किया। यह सुन कर वह महिला डर गई किन्तु हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया- तुझ पर कोई दोष नहीं। इसके बाद आप रज़ी. ने एक तहरीर लिखी कि आज उमर

ने अमुक महिला से उसके कष्टों की स्थिति पच्चीस दीनार में ख़रीदी है, अब यदि वह हिसाब के दिन अल्लाह के सामने दावा करे तो उमर इससे बरी है, अली और अब्दुल्लाह इस पर गवाह हैं। आप रज़ी. ने वह तहरीर हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को दी और फ़रमाया कि यदि मैं तुमसे पहले मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँ तो यह तहरीर मेरे कफ़न में रख देना।

हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने एक लड़की से अपने बेटे आसिम का रिशता केवल उसकी सच्चाई को देख कर दिया था। एक व्यक्ति को बाज़ार में रास्ते से हटाने के लिए अपने कोड़े से संकेत किया, वह कोड़ा हल्का सा उसके लिबास से लग गया, एक साल बाद उस व्यक्ति को छ: सौ दर्हम दिए तथा फ़रमाया कि यह उसका बदला है। आप रज़ी. यह भी देखा करते कि बाज़ार में चीज़ों के भाव ऐसे हों जिनसे किसी भी पक्ष के नागरिक अधिकार प्रभावित न हों। एक व्यक्ति ने अपनी बेटी के विषय में बताया कि उससे पिछले जीवन में एक ग़लती हुई थी तथा अल्लाह तआला के आदेशों को तोडऩे के कारण दंड उस पर लग गया था, उसने आत्म हत्या का भी प्रयास किया था परन्तु अब वह तौबा कर चुकी है, क्या उसकी शादी के लिए पैग़ाम लाने वालों को यह सब कुछ बताया जाए। हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह ने उसका पर्दा रखा और तू उसे ज़ाहिर करना चाहता है। अल्लाह की क़सम! यदि तू ने ऐसा किया तो मैं तुझे पूरे नगर वासियों के सामने इबरत (मानसिक खेद) का सामान बनाऊँगा।

सत्तर हिजरी में हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु मदीने से शाम देश के लिए चले तथा सुर्ग नामक स्थान पर पहुंचे, वहाँ आप रज़ी. को पता चला कि रमला तथा बैतुल मुक़द्दस के रास्ते में छ: मील की दूरी पर एक घाटी अमवास नामक है जहाँ ताऊन फूट पड़ी है। इस महामारी ने पूरे शाम देश को अपनी लपेट में ले लिया है तथा लगभग पच्चीस हज़ार लोग हताहत हुए हैं। हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु उस समय किस तरह लोगों की चिंता करते रहे उसका बयान सही बुख़ारी की रिवायत में मिलता है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फ़रमान पेश फ़रमाया कि जहाँ महामारी फूट पड़े वहाँ मत जाओ, और यदि उस जगह पर हो तो वहाँ से फ़रार होते हुए मत निकलो। इस महामारी के कारण हज़रत अबू उबैदा रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु तथा शाम देश में आपके उत्तराधिकारी हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु का निधन हो गया। हज़रत मुआज़ ने अपने स्थान पर पदाधिकारी हज़रत उमरू बिन आस रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को नियुक्त फ़रमाया था। हज़रत उमरू बिन आस रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने लोगों को फ़रमाया कि पहाड़ों में छिप कर अपने जीवन बचाओ, इस तरीक़े से यह महामारी धीरे धीरे कम होकर समाप्त हो गई। जब यह सूचना हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को मिली तो आप रज़ी. ने इसे बहुत पसन्द फ़रमाया।

हज़रत अबू उबैदा रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु के अतिरिक्त हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत ज़ैद बिन अबू सुफ़यान, हज़रत हारिस बिन हिश्शाम, हज़रत सुहेल बिन उमरू और हज़रत उतैबा बिन सुहेल रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु तथा अन्य आदरणीय लोगों का भी इस महामारी में निधन हुआ।

हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की दुआओं की क़बूलियत की घटनाओं में वर्णन मिलता है कि एक बार भारी अकाल पड़ा तो आप रज़ी. ने नमाज़-ए-इस्तिसक़ा अदा की तथा ख़ुदा से दुआ की तो तुरन्त वर्षा हो गई। इस्लाम से पहले मिस्र के लोगों में यह प्रथा थी कि जब नील सागर सूख जाता तो वे एक कंवारी लड़की को सजा संवार कर दर्या में डाल देते। इस्लाम के बाद जब नील दर्या सूखा तो हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ करके एक पर्ची भिजवाई जिस पर लिखा था कि ऐ नील दर्या! यदि तुझे अल्लाह तआला चला रहा है तो मैं दुआ करता हूँ कि वह तुझे चला दे। आप रज़ी. के आदेशानुसार वह पर्ची दर्या में डाली गई तो दर्या जारी हो गया। हज़रत सारिय: इस्लामी सेना के साथ कठिनाई में पड़ गए तो हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की ज़बान पर मदीने में ये शब्द जारी हुए कि "या सारिया अलजबल" ये शब्द हज़रत सारिय: को युद्ध स्थल पर सुनाई दिए और यूँ मुसलमान बड़े विनाश से सुरक्षित रहे। एक बार रोम के राजा को घोर सिर दर्द का कष्ट हो गया जो हज़ार उपचार से भी ठीक न हुआ, अन्तत: हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की पुरानी मैली टोपी पहनने से ख़ुदा ने उसे स्वस्थ कर दिया।

हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु दुआ किया करते कि ऐ अल्लाह! मुझे नेक लोगों के साथ वफ़ात दे, मुझे आग से बचा। ऐ अल्लाह! मेरी आयु अधिक तथा शक्ति कम हो गई है और मेरे राज्य की जनता विस्तृत हो गई है, तू मुझे नष्ट किए बिना मृत्यु दे। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर को यह दुआ सिखाई थी कि ऐ अल्लाह, मेरे प्रत्यक्ष को मेरे अप्रत्यक्ष से अच्छा बना दे तथा मेरे ज़ाहिर को अच्छा कर।

हज़रत इब्ने उमर की रिवायत है कि अकाल के दिनों में हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने एक नया काम किया जिसे वे न किया करते थे, वह यह था कि लोगों को इशा की नमाज़ पढ़ाकर अपने घर चले जाते तथा रात के अन्तिम समय तक निरन्तर नमाज़ पढ़ते रहते, फिर आप बाहर निकलते तथा मदीने के चारों ओर चक्कर लगाते रहते। एक रात सहरी के समय मैंने उनको यह कहते हुए सुना कि हे अल्लाह! मेरे हाथों मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को विनाश में न डालना।

हज़रत इब्ने उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु का यह तरीक़ा यह था कि नमाज़ में सफ़ें सीधी कराने के लिए एक व्यक्ति नियुक्त किया हुआ था। जब नमाज़ के लिए अक़ामत होती तो किबले की ओर पीठ करके अर्थात लोगों की तरफ़ मुंह करके सफ़ें सीधी कर रहे होते थे, कि तुम अपनी सफ़ों को सीधी रखो, जब सफ़ें सीधी हो जातीं तो फिर आप $किबले की ओर मुंह करके अल्लाहु अकबर कहते।

आप अल्लाह की राह में अत्यधिक ख़र्च करने वाले थे। अल्लाह की नाराज़गी के भय की यह स्थिति थी कि निधन के समय आँखों से आंसू जारी थे और फ़रमाते जाते थे कि मैं किसी पुरस्कार का अधिकारी नहीं, मैं केवल यह चाहता हूँ कि सज़ा से बच जाऊँ। ख़ुत्ब: के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अभी थोड़ी से बातें हैं जो अगले ख़ुत्बों में इन्शाअल्लाह बयान हो जाएँगी।

☆ ☆ ☆

क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर

(लेखक- मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया, उत्तर भारत क़ादियान)

(भाग-1) अनुवादक- सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

इस धरती पर बसने वाले करोड़ों मुसलमानों का यह ईमान और विश्वास क़यामत तक रहेगा कि क़ुरआन-ए-मजीद अल्लाह का कलाम है और नुज़ूल के दिन से ही अल्लाह तआला ने उसको अपने संरक्षण में रखा हुआ है और क़यामत तक रखेगा। और यह भी एक हक़ीक़त है कि पिछली चौदह सदियों में शैतानी और पिशाचवृत्त ताक़तों ने इस कलाम इलाही में सैंकड़ों मर्तबा आपत्ति और संदेह पैदा करने की कोशिशें कीं और यह सिलसिला अब तक जारी है। वर्तमान में ही लखनऊ के वसीम रिज़वी नामी एक व्यक्ति ने सुप्रीमकोर्ट आफ़ इंडिया में एक अर्ज़ी दाख़िल की और 26 क़ुरआन-ए-मजीद की आयतों को हज़फ़ करने का मुतालिबा किया। निवेदन पत्र देने वाले के अनुसार इन आयतें में दहश्तगर्दी और इंतिहापसंदी की शिक्षा दी गई है जिस से वर्तमान समय में कुछ गिरोह नौजवानों को दहश्तगर्दी के लिए वरग़लाते हैं और उस के कथन के अनुसार ये आयतें मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र जीवन में क़ुरआन-ए-मजीद का हिस्सा नहीं थीं बल्कि ख़ुलफ़ा-ए राशेदीन में से पहले तीन खलि़फ़ा-ए-ने उनको क़ुरआन-ए-मजीद में शामिल किया। अलहम्दो लिल्लाह तिथि 12 अप्रैल 2021ई. को सुप्रीमकोर्ट ने ऊपर वर्णित निवेदन ख़ारिज कर दिया और उस पर अपनी नाराज़गी का प्रकटन करते हुए पच्चास हज़ार रुपय (50,000) जुर्माना डाल दिया। इसलिए इस विषय में रोज़नामा हिंद समाचार में तिथि 13 अप्रैल 2021को निमन्लिखित ख़बर प्रकाशित हुई :

नई दिल्ली 12 अप्रैल (यू एन आई) : सुप्रीमकोर्ट ने सोमवार को क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतें को हटाने का निवेदन ख़ारिज कर दिया। जस्टिस रोहिंगटन फ़ाली नरेमन के प्रबंध वाली बैंच ने उतर प्रदेश शीया वक़्फ़ बोर्ड के पूर्व चेयरमैन वसीम रिज़वी की दरख़ास्त ख़ारिज कर दी और उन पर 50,000 रुपय का जुर्माना लगाया। जस्टिस नरीमन ने कहा "यह मुकम्मल तौर पर ग़ैर संजीदा रिट पटीशन है'। केस की सुनवाई के दौरान जस्टिस नरीमन ने पूछा कि क्या निवेदन देने वाला इस दरख़ास्त के बारे में संजीदा है?'' उन्होंने कहा "क्या आप दरख़ास्त की समाअत पुर इसरार कर रहे हैं? क्या आप वाक़ई संजीदा हैं?"

क़ुरआन-ए-मजीद के ख़िलाफ़ फ़ुज़ूल और तुच्छ बातें करने वाले वसीम रिज़वी की तरफ़ से पेश सीनीयर ऐडवहकेट आर. के रायज़ादा ने उत्तर दिया कि वह मद्रस्सा तालीम के कवायद के लिए अपना निवेदन सीमित कर रहे हैं। इसके बाद उसने अपने साथी का मत प्रस्तुत किया, जिस से बैंच संतुष्ट नज़र नहीं आया और उसने 50 हज़ार रुपय जुर्माना करते हुए दरख़ास्त ख़ारिज कर दी।

ध्यान रहे रिज़वी की अर्ज़ी में कहा गया था कि इन आयतें में इन्सानियत के बुनियादी उसूलों को नज़रअंदाज किया गया है और ये मज़हब के नाम पर नफ़रत, क़तल, ख़ूनख़राबा फैलाने वाला है, इसके साथ ही ये आयतें दहश्तगर्दी को बढ़ावा देने वाली है। रिज़वी का यह भी कहना था कि ये क़ुरआन-ए-मजीद की आयतें मद्रस्सों में बच्चों को पढ़ाई जा रही हैं, जो उनकी बुनियाद डालने का कारण हैं दरख़ास्त में कहा गया

है कि क़ुरआन-ए-मजीद की इन 26 आयतें में ज़ुल्म की शिक्षा दी गई है, ऐसी तर्बीयत जो दहश्तगर्दी को बढ़ावा देती है उसे रोका जाना चाहीए। (हिंद समाचार, जालंधर, दिनांक 13 अप्रैल 2021 पृष्ठ 2,1)

अलहमदो लिल्लाह 26 आयतें याद करवाने के सिलसिला में निवेदन तो ख़ारिज हो गया परन्तु निवेदन देने वाला और उसके साथियों ने वर्णित आयतें और बुख़ारी की कुछ अहादीस के हवाले से क़ुरआन-ए-मजीद के बारे में संदेह और आपत्ति अख़बार, रेडीयो, टेलीविज़न के माध्यम से पैदा करने की कोशिश की है जिससे कुछ ग़ैर मुस्लिमों के ज़हनों में यह प्रश्न पैदा हुआ कि :

(1) जब एक मुसलमान ने क़ुरआन-ए-मजीद के बारे में तहरीफ़ और तबदील करने का आरोप लगाया है तो इस में सच्चाई किया है?

(2) दूसरी तरफ़ मुसलमानों की नई नसल मुसलमान होने के बावजूद अर्ज़ी देने वाला के तहरीर करदा आरोपों का उत्तर चाहती है। ताकि वे इस उत्तर की रोशनी में ख़ुद को और ग़ैरमुस्लिम दोस्तों को क़ुरआन-ए-मजीद की सदाक़त का क़ायल कर सके।

वर्णित वजूहात की बिना पर वसीम रिज़वी के तहरीर करदा आरोपों के उत्तर तहरीर कर दिए गए हैं। इस दुआ के साथ कि अल्लाह तआला इन उत्तरों को मुसलमानों और दूसरे मज़ाहिब के अच्छी परिवर्ती वाले दोस्तों के दिलों में पैदा शूदा संदेहों के निवारण का बायस बना दे। आमीन। तथा ख़ुदा क़ुरआन-ए-मजीद के बारे में उनके ईमान को ओर मज़बूती प्रदान करे। आमीन।

आरोप नंबर-1: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो कि 632 ई. में फ़ौत हुए अल्लाह तआला ने उन्हें इन्सानियत के लिए एक संदेश दिया था और यह क़ुरआन-ए-मजीद उनकी ज़िंदगी में नहीं बना था बल्कि आपके बाद बनाया गया।

उत्तर : हर सच्चा और हक़ीक़ी मुसलमान यह विश्वास और ईमान रखता है कि ख़ुदा तआला ने मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर तक़रीबन 23 वर्ष के अरसा में क़ुरआन-ए-मजीद नाज़िल फ़रमाया और इसी नाज़िल करने वाले ख़ुदा ने इसी क़ुरआन-ए-मजीद में यह ऐलान और वादा सदैव के लिए फ़र्मा दिया कि : اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ (सूरत अल् हिज्र, आयत नंबर 10)

अनुवाद : निस्संदेह हमने ही यह ज़िक्र उतारा है और निस्संदेह हम ही इस की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। इस आयत-ए-करीमा में अल्लाह तआला ने वादा फ़र्मा दिया कि मैंने ही क़ुरआन-ए-मजीद को उतारा है और मैं ही इस का हिफ़ाज़त करने वाला और संरक्षक रहूँगा। और ज़मीन पर रहने वाले किसी इन्सान की मजाल नहीं कि वह इस में कमी बेशी कर दे। इस वादे से यह मालूम होता है कि यदि किसी ने यह जुर्रत और साहस किया कि क़ुरआन-ए-मजीद में कोई रद्द-ओ-बदल कमी या बढ़ोतरी करे उसे सर्व शक्तिमान ख़ुदा कदापि ऐसा नहीं करने देगा पिछली 14 सदियां इस पर गवाह और शाहिद हैं।

क़ुरआन-ए-मजीद के नुज़ूल (उतरने) और इकट्ठा करने की तारीख़

एक अनुमान के अनुसार क़ुरआन-ए-मजीद का नुज़ूल 24 नातिक़ (रमज़ान) के अनुसार 20 अगस्त 610 ई.को शुरू हुआ और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात दिनांक एक

रबीउल अव्वल 11 हिज्री के अनुसार 26 मई 632 ई. तक भिन्न भिन्न समयों में नाज़िल होता रहा। इस हिसाब से आपकी नबुव्वत के दिनों की संख्या तक़रीबन सात हज़ार नौ सौ सत्तर (7970) दिन बनती है और क़ुरआन-ए-करीम के शब्द की कुल संख्या (77924) बनती है। इस हिसाब से प्रतिदिन नुज़ूल की औसत कम-ओ-बेश नो (9) शब्द बनते हैं। इतिहास से ज्ञात होता है कि कभी कबार क़ुरआन-ए-मजीद की आयतें अत्यधिकत नाज़िल होती थीं और कभी कबार कम। और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का तरीक़ मुबारक था कि जितनी आयतें नाज़िल होतीं हैं सहाबा किराम को साथ साथ ज़बानी याद करवा देते। नुज़ूल क़ुरआन-ए-मजीद की आरंभ से ही हज़रत जिब्राईल सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास से उस समय तक नहीं जाते जब तक आपके हाफ़िज़े में नाज़िल शुदा आयतें महफ़ूज़ और याद न हो जातीं और जिब्राईल के जाने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने सहाबा के पास आते तो उन को नाज़िल शुदा आयतें साथ-साथ याद करवाते जाते और इस तरह क़ुरआन-ए-मजीद सहाबा के हाफ़िज़ा में प्रथम दिन से ही महफ़ूज़ होता चला जा रहा था। सहाबा के सीने और हाफ़िज़े में जो क़ुरआन-ए-मजीद जमा और महफ़ूज़ होता रहा वह ताबेईन और तबा ताबेईन ने अपने हाफ़िज़ा और सीने में महफ़ूज़ किया और वही क़ुरआन-ए-मजीद नसल दर नसल सीने से सीने आज तक मुसलमानों के हाफ़िज़ा में महफ़ूज़ है और एक के बाद दूसरी नसल में स्थानांतरित होता चला जा रहा है। तारीख़-ए-इस्लाम में ज़िक्र है सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी हयाते मुबारका में जो आख़िरी हज फ़रमाया इस में तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार (124000) सहाबा थे और यह एक स्वभाविक और क़ुदरती बात है कि इन में से एक बड़ी संख्या ऐसे हुफ़्फ़ाज़ की थी जिनके हाफ़िज़ा और सीने में क़ुरआन-ए-मजीद महफ़ूज़ था। फिर रमज़ानुल मुबारक में तरावीह का सिलसिला शुरू हुआ और रमज़ान में सारी दुनिया की बड़ी-बड़ी मसाजिद में मुकम्मल क़ुरआन-ए-मजीद के हाफिज़(इमाम) नमाज़ियों को बुलंद आवाज़ से क़ुरआन-ए-मजीद सुनाते हैं और एक हाफ़िज़ इमाम के पीछे खड़ा रहता है ताकि यदि इमाम किसी जगह भूल जाये तो वह उसको याद कराए। तरावीह का यह तसलसुल इंडोनेशिया से लेकर चीन और अफ़्रीक़ा, यूरोप और अमरीका उपमहाद्वीप, हिंद और पाक और अरब में जारी और सारी है और सीने से सीने में महफ़ूज़ क़ुरआन-ए-मजीद के पढ़ने में कहीं भी कोई अंतर नहीं और यह अल्लाह तआला के उस वादे की सबसे बड़ी तसदीक़ और सच्चाई है कि पिछली चौदह सदीयों में क़ुरआन-ए-मजीद सीने से सीने में नसल बंसल बड़े महफ़ूज़ तरीक़ से स्थानांतरित होता चला आरहा है और उसकी कोई मिसाल दुनिया की किसी किताब में नहीं मिलेगी और हिफ़ाज़त के इस निज़ाम को नज़र अंदाज करके कोई आरोप लगाना प्रले दर्जे की जहालत का सबूत होगा।

क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त का तरीक़ा :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह तरीक़ था कि जो आयतें क़ुरआन-ए-मजीद शरीफ़ की नाज़िल होती जाती थीं उन्हें साथ-साथ लिखवाते जाते और ख़ुदाई तफ़हीम के अनुसार उनकी तर्तीब भी ख़ुद निर्धारित फ़रमाते जाते थे। इस बारे में बहुत सी हदीसें मिलती हैं जिनमें से दर्ज निम्नलिखित हदीस बतौर मिसाल के पेश की जाती है :

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّان رضی اللہ عنہما کان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا نَزَلَ علیہ شیئٌ دَعَا بَعْضَ مَن کَانَ یَکْتُبُ فیقول ضَعوا ھٰؤُلآءِ الاٰیات فی سو رۃ الَّتی یَذْ کُرُ فیھا کَذَاوَ کَذَا فَاِذَا نَزَلَتْ عَلَیْہِ الاٰیۃُ فَیَقُولُ ضَعُوا ھذہٖ الاٰیۃ فی السُورۃ الّتی یذ کر فیھا کذاوَ کذا

(तिरमिज़ी अबू दाउद, मसनद अहमद बा-हवाला मिश्कात बाब फ़ज़ायल क़ुरआन-ए-मजीद)

अर्थात हज़रत इब्ने अब्बास जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चचाज़ाद भाई थे रिवायत करते हैं कि हज़रत उस्मान ख़लीफ़ा सालिस (जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में वह्यी के लिखने वाले रह चुके थे) फ़रमाया करते थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जब कुछ आयतें इकट्ठी नाज़िल होती थीं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने वह्यी के लिखने वाले में से किसी को बुला कर इरशाद फ़रमाते थे कि इन आयतें को अमुक सूर: में अमुक जगह लिखों और यदि एक ही आयत उतरती थी तो फिर इसी तरह किसी वह्यी के लिखने वाले को बुला कर और जगह बता कर उसे तहरीर करवा देते थे।

जिन सहाबा से वह्यी के लिखवाने का काम लिया जाता था उनके नाम और हालात तफ़सील-ओ-ताय्युन के साथ तारीख़ में महफ़ूज़ हैं। इन में से अत्याधिकत प्रसिद्ध सहाबा ये थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ुबैर बिन अल् अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत शर्जील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबी बिन क़ाब रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो। (फ़तह अल-बारी, भाग 9 पृष्ठ 19 व ज़रक़ानी, भाग 4 पृष्ठ 311से 326)

इस फ़हरिस्त से ज़ाहिर है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस्लाम के आरंभ में से ही एक विश्वसनीय जमाअत क़ुरआन-ए-मजीद की वह्यी के कलमबंद करने के लिए मौजूद थी और इस तरह क़ुरआन-ए-मजीद शरीफ़ न केवल साथ-साथ तहरीर में आता गया था बल्कि साथ ही साथ उस की मौजूदा तर्तीब भी जो कुछ उद्देश्य के अधीन नुज़ूल की तर्तीब से अलग रखी गई है क़ायम होती गई आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद जबकि नुज़ूल क़ुरआन-ए-मजीद पूर्ण हो चुका था हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा अव्वल ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के मश्वरा से हज़रत ज़ैद बिन साबित अंसारी को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वह्यी को लिखने वाले रह चुके थे हुक्म फ़रमाया कि वह क़ुरआन-ए-मजीद शरीफ़ को एक बाक़ायदा पुस्तक की सूरत में इकट्ठा करवा कर सुरक्षित कर दें। इसलिए ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु ने बड़ी मेहनत के साथ हर आयत के मुतल्लिक़ ज़बानी और तहरीरी हर दो किस्म की पुख़्ता गवाह प्रदान करके उसे एक बाक़ायदा पुस्तक की सूरत में इकट्ठा कर दिया। (बुख़ारी किताब फ़ज़ायल अल्क़ुरआन बाब किताब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) इसके बाद जब इस्लाम मुख़्तलिफ़ देशों में फैल गया तो फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा सालिस के हुक्म से ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के एकत्र करदा नुस्खे के अनुसार क़ुरआन-ए-मजीद शरीफ़ की असंख्य प्रमाणित प्रतियां (कापियां) लिखवा कर समस्त इस्लामी देशों में भिजवा दी गईं।

(बहवाला बुख़ारी किताबुल फ़ज़ायल अल्-क़ुरआन बाब जमा अल्-क़ुरआन, फ़तह भाग 9 पृष्ठ 18-17)

हिफ़ाज़त के इस दूसरे तरीक़ के बाद एतिराज़ करने वाले के आरोप का खोखलापन और बे-बुनियाद होना वाज़िह और साबित है और यह कहना कि क़ुरआन-ए-मजीद की किताब बाद में बनाई गई इंतिहाई हैरत-अंगेज़ है और कम इलमी का सबूत है। एतिराज़ करने वाले को इलम होना चाहीए कि शब्द किताब (كَتَبَ،يَكْتُبُ، كِتَابًا) से लिया गया है अल्लाह तआला ने सूरत अल् बकरा की इब्तिदा में ही हर क़ुरआन-ए-मजीद पढ़ने वाले को यह नवीद सुना दी"ذالك الكتاب"कि यह वह किताब है। एतिराज़ करने वाले को चाहीए शब्द किताब पर ग़ौर करे यदि यह किताब तहरीर शूदा सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अहद-ए- मुबारक में मौजूद नहीं थी तो उस समय मुनाफ़क़ीन और मुख़ालिफ़ीन इस्लाम जो मदीना में ही मौजूद थे यह प्रश्न उठा ताकि जिस कलाम इलाही को किताब कहा जा रहा है वह है कहाँ? वह किताबी की शक्ल में हमें नज़र नहीं आती। इन के सुकूत से वाज़िह है कि इस समय के प्रचलित तरीक़ के अनुसार क़ुरआन-ए-मजीद तहरीरी शक्ल में मौजूद था। और इस पर ज़्यादा यह है कि अल्लाह ने ऐलान फ़रमाया لَارَيْبَ فِيْه यह जो किताब है इस में शक की न कोई गुंजाइश है और न कोई ख़दशा और न कोई सम्भावना। हे क़ुरआन-ए-मजीद पढ़ने वाले पूरे यक़ीन और इतमिनान से उसको पढ़ और उसका अध्यन कर। इन सारे सम्भावनाी आरोपों का अल्लाह तआला ने इबतिदाई दो शब्द में निवारण फ़र्मा दिया है।

अल्लाह तआला ने हिफ़ाज़त और हद दर्जा की सावधानी को दृष्टिगत रखते हुए यह तरीक़ भी इख़तियार फ़रमाया कि हर रमज़ान में जितना क़ुरआन-ए-मजीद नाज़िल हुआ करता था हज़रत जिब्राई अलैहिस्सलाम सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसकी दुहराई फ़रमाया करते थे और फिर जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जीवन का आख़िरी वर्ष था तो दोनों ने यह दुहराई दो बार की। इसलिए उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मेरे कान में फ़रमाया कि हर वर्ष जिब्राई मेरे साथ क़ुरआन-ए-मजीद का एक दफ़ा दौर किया करते थे लेकिन इस वर्ष दो दफ़ा दौर किया इस इससे मैं यही समझता हूँ कि मेरे सवर्गवास का समय क़रीब आ गया है।

إِنَّ جِبْرِيلَ كَانَ يُعَارِضُنِي الْقُرْآنَ كُلَّ سَنَةٍ وَإِنَّهُ عَارَضَنِي الْعَامَ مَرَّتَيْنِ(صحيح بخارى، كتاب التفسير،باب كان جبريل يعرض القرآن)

अनुवाद : हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी इस बीमारी में जिसमें आपकी वफ़ात हुई अपनी साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ी अल्लाह अन्हा से फ़रमाया जिब्राई हर साल मुझ से एक-बार क़ुरआन-ए-क्रीम का दौर करते थे लेकिन इस साल उन्होंने दो दफ़ा दौर किया है। अब इस ख़ुदाई प्रबंध के बाद कोई सम्भावना वर्तमान क़ुरआन-ए-मजीद में कमी बेशी की नहीं रहती।

क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त के सम्बन्ध में मुस्तश्रिक़ीन (पाश्चात्य वद्वानों) की स्वीकृति

यहां यह बताना भी आवश्यक है कि मुस्तश्रिक़ीन ने इस बात का खुल्लमखुल्ला इक़रार किया है कि

आज जो क़ुरआन-ए-मजीद मुसलमानों के हाथों और उनके सीनों में महफ़ूज़ है वह वही क़ुरआन-ए-मजीद है जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ था। कुछ की प्रतिपुष्टि निम्नलिखित हैं।

सर विलियम म्योर की राय : सर विलियम म्योर लिखते हैं कि "दुनिया के पर्दे पर शायद क़ुरआन-ए-मजीद के अतिरिक्त और कोई किताब ऐसी नहीं जो बारह सौ साल के लम्बे समय तक बिना किसी परिवर्तन और बदलाव के अपनी असली अवस्था में महफ़ूज़ रही हो।'' फिर लिखते हैं: "हमारी इंजीलों का मुसलमानों के क़ुरआन-ए-मजीद के साथ मुक़ाबला करना जो बिल्कुल ग़ैर परिवर्तन और बदलाव के चला आ रहा है। दो ऐसी चीज़ों का मुक़ाबला करना है जिन्हें आपस में कोई भी निसबत नहीं।" फिर लिखते हैं : "इस बात की पूरी पूरी अंदरूनी और बैरूनी ज़मानत मौजूद है कि क़ुरआन-ए-मजीद अब भी इसी शक्ल-ओ-सूरत में है जिसमें कि मुहम्मद ने उसे दुनिया के सामने पेश किया था।'' फिर लिखते हैं : हम यह बात पूरे यक़ीन के साथ कह सकते हैं कि क़ुरआन-ए-मजीद की हर आयत मुहम्मद से लेकर आज तक अपनी असली और ग़ैर मुबद्दल अवस्था में चिली है।'' (बहवाला लाईफ़ आफ़ मुहम्मद, दीबाचा पृष्ठ 21-22-25-26)

नोल्ड की राय : नोल्ड की जो जर्मनी का एक निहायत प्रसिद्ध ईसाई मुस्तश्रिक़ गुज़रा है और जो इस फ़न में मानों उस्ताद माना गया है। क़ुरआन-ए-मजीद के सम्बन्ध में लिखता है कि "आज का क़ुरआन-ए-मजीद ठीक उसी प्रकार वही है जो सहाबा के वक़्त में था।'' फिर है: "योरोपियन उल्मा की यह कोशिश कि क़ुरआन-ए-मजीद में कोई परिवर्तन साबित करें पूर्णत: नाकाम रही है।"

(इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका शब्द क़ुरआन-ए-मजीद)

प्रोफ़ैसर निकल्सन की राय : फिर इंग्लिस्तान का प्रसिद्ध मसीही मुस्तश्रिक़ प्रोफ़ैसर निकल्सन अपनी अंग्रेज़ी पुस्तक "अरब की अदबी तारीख़" में लिखता है: "इस्लाम की आरंभिक तारीख़ का ज्ञान हासिल करने के लिए क़ुरआन-ए-मजीद एक बेनज़ीर और हर शक-ओ-शुबा से पवित्र किताब है और यक़ीनन बुद्ध धर्म या मसीहीयत या किसी पुराने धर्म को इस किस्म का मुस्तनद असरी रिकार्ड हासिल नहीं है,जैसा कि क़ुरआन-ए-मजीद में इस्लाम को हासिल है।'' (अरब की अदबी तारीख़)

मुख़ालिफ़ीन की रायों के बाद बरमला यह कहा जा सकता है कि اَلفَضلُ مَا شَهِدَت بِهِ الاَعدَاءُ प्रतिष्ठा वही होती है जिसकी दुश्मन गवाही दे। जादू वह जो सिर चढ़ कर बोले।

आरोप नम्बर : 2

एतिराज़ करने वाले ने सही बुख़ारी की कुछ अहादीस के हवाले से तहरीर किया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद चार सहाबा जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के संदेश से वाक़िफ़ थे यही चार अंसार थे जिन्होंने क़ुरआन-ए-करीम को जमा किया और फिर हज़रत अबू दर्दा का वर्णन किया है।

उत्तर : एतिराज़ करने वाले के आरोप के उत्तर में तहरीर है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जीवन के आख़िरी दिनों में एक व्यक्ति मुसल्मा (कज़्ज़ाब) नामी ने नबुव्वत का ऐलान कर दिया

और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद इस्लामी हकूमत से बग़ावत कर दी। यह व्यक्ति यमामा का रहने वाला था जब उसकी बग़ावत का असर बड़ा होने लगा और यह उपद्रव का कारण बनने लगा तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके दमन के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को तेराह हज़ार (13000) मुसलमानों का लश्कर देकर रवाना फ़रमाया। मुसल्मा कज़्ज़ाब ने अपने चालीस हज़ार (40000) अस्करियों के साथ ख़ालिद बिन वलीद के लश्कर का मुक़ाबला किया और फ़रीक़ैन में घमासान की जंग हुई और इस जंग में बहुत सारे सहाबा शहीद हो गए। उनमें से बहुत से क़ुरआन-ए-मजीद के हाफ़िज़ और क़ारी थे। बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि इस हादिसा के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे अपने पास बुलाया। उस वक़्त हज़रत उमर बिन अल्-ख़िताब भी आपके पास थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे अर्थात ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि उमर मेरे पास आए और कहा कि जंग-ए-यमामा में क़ुरआन-ए-मजीद के बहुत से हुफ़्फ़ाज़ शहीद हो गए हैं और इसी तरह और कई स्थानात पर पुराने हुफ़्फ़ाज़ और कारी शहीद हो गए हैं और फ़ौत होते चले जा रहे हैं। इस लिए मेरा निवेदन है कि आप क़ुरआन-ए-मजीद को एक साथ करने का हुक्म दें। मैंने हज़रत उमर से कहा मैं वह काम किस तरह कर सकता हूँ जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नहीं किया? हज़रत उमर ने कहा ख़ुदा की क़सम फिर भी यह अच्छा है। अत: हज़रत उमर बार-बार मुझे कहते रहे। इसके बाद अल्लाह तआला ने मेरा सीना खोल दिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के निम्नलिखित शब्द ध्यान देने योग्य हैं। حَتّٰى شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرِى لِذٰلِكَ (बुख़ारी किताब अल् तफ़सीर बाब जमा अल् क़ुरआन) अर्थात अल्लाह ने क़ुरआन-ए-करीम को एक साथ करने के लिए हज़रत अबू बकर का सीना खोल दिया। सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़लीफ़ा अव्वल जिसके बारे में अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाया ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِى الْغَارِ (सूरत तौबा आयत : 40) अर्थात दो में से एक जब वे दोनों गुफा में थे। इसका सीना उस अल्लाह तआला ने खोला जिसने क़ुरआन-ए-मजीद नाज़िल फ़रमाया था और उसके माध्यम से वह वादा पूरा फ़रमाया وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (अल हिज्र -10) اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ (अल् कय्यामा आयत-18) क़ुरआन-ए-मजीद को एक साथ करवाना, रखवाना और क़ियामत तक उसकी हिफ़ाज़त करते चले जाना यह अल्लाह की ज़िम्मेदारी है। इसलिए बुख़ारी की रिवायत में वर्णित है कि क़ुरआन-ए-मजीद जो मुख़्तलिफ़ स्थानों पर तहरीर शुदा था उसको एक साथ करने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत ज़ैद बिन साबित को शरह सदर अता फ़रमाया उन्होंने क़ुरआन-ए-मजीद खजूर (लकड़ी) की तख़्तीयों और पत्थर की सलेटों और "صدور الرجال" (लोगों के सीनों में) से सरक्षित और इकट्ठा किया।

याद रहे कि हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन-ए-मजीद को इकट्ठा करने की यह कार्रवाई कहीं छुप कर या ख़ुफ़ीया तौर पर नहीं कर रहे थे बल्कि मदीना मुनव्वरा में यह फ़रीज़ा अदा कर रहे थे और इस वक़्त इसी मदीना मुनव्वरा में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और पुराने किबार सहाबा भी मौजूद थे उनकी मौजूदगी में किसी किस्म के बढ़ाने और घटाने की कोई सम्भावना कदापि नहीं थी और न ही किसी ने ऐसे संदेह का इज़हार

किया। यह मुस्तनद मुसहफ़ क़ुरआन-ए-मजीद हज़रत उम्मुल मोमेनीन हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की साहबज़ादी सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पत्नी थीं के पास अमानतन रखवा दिया गया और जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के अहद-ए-ख़िलाफ़त में इस्लामी हकूमत की सीमा अजमी और ग़ैर अरबी इलाक़ों तक बढ़ गई और ग़ैर अरबी लोग और दूर दराज़ के अरब क़बायल के लोग इस्लाम में शामिल हो गए। आर्मेनिया और अज़रबाइजान भी इस्लाम में दाख़िल हो गया तो यह मुनासिब और आवश्यक समझा गया कि दूर दराज़ के इलाक़ों में क़ुरआन-ए-मजीद को सही उच्चारण और तर्तीब से पढ़ने के लिए असल मुस्तनद क़ुरआन-ए-मजीद की नकलें (प्रतियां) तैयार करवा कर मुख़्तलिफ़ देशों में भिजवा दी जाएं इसलिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने असल नुस्ख़ा क़ुरआन-ए-मजीद हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से मंगवाया और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि इस की नकलें करें, इसलिए उन्होंने इस की नकलें तैयार कीं और यह सब कुछ मदीना मुनव्वरा में किबार सहाबा की मौजूदगी में हुआ। असल नुस्ख़ा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा को वापस भिजवा दिया। رَدَّ عُثْمَانُ الصُّحُفَ إِلَى حَفْصَة (बुख़ारी अल् तफ़सीर) एतिराज़ करने वाले की सारी तवज्जा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के समय में क़ुरआन-ए-मजीद को एक साथ करने और इस की नकलें करवाने की तरफ़ रही और ख़ुद को भी और दूसरों को भी इस भ्रम में डालने की कोशिश की कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता इन दोनों खलीफ़ाओं ने इसे तहरीर करवाया। एतिराज़ करने वाले को यह याद रखना चाहिए कि क़ुरआन-ए-मजीद हज़ारों सहाबा और ताबईन के हाफ़िज़ा और सीनों में बहुत पहले से महफ़ूज़ था यह तो एक एहतियात से संबंधित तरीक़ था जो अपनाया गया। **(शेष.....)**

☆ ☆ ☆

Asifbhai Mansoori 9998926311
Sabbirbhai 9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

कुछ अज्ञानियों द्वारा किए गए ऐतराज़ों के उत्तर

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में

अनुवादक- फ़रहत अहमद आचार्य

और उनके ऐतराज़ों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि यह व्यक्ति (अर्थात यह विनीत) ईसा मसीह के मोजिज़ों (चमत्कारों) का अपमान करता है और कहता है कि वे चमत्कार कुछ भी नहीं और अगर मैं चाहता तो उन जैसा बल्कि उनसे भी बड़ा चमत्कार दिखाता परन्तु मैं उसे पसंद नहीं करता हूं और शौक रखने वालों के समान उनकी ओर ध्यान नहीं देता।

इसका उत्तर यह है कि मोजिज़ा (चमत्कार) दिखाना बन्दों का काम नहीं बल्कि अल्लाह के कामों में से है और कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि मैं अपनी शक्ति और इरादे से यह यह काम करूंगा। मनुष्य जो अपनी शक्ति, इरादे और उपाय से करता है वह मनुष्य के कर्मों में से एक कर्म है और हम उसका नाम चमत्कार नहीं रखते बल्कि वह एक उपाय या जादू है। अत: हे मेरे भाई! अल्लाह तआला तुझे हिदायत में बढ़ाए! तू भली-भांति समझ ले कि मैंने ऐसे नहीं कहा जैसे जल्दबाज़ों ने समझा है। बल्कि मैंने एक मुसलमान मर्द के रूप में अपने आका और मौला मुहम्मद मुस्तफा ख़ातमुन्नबिय्यीन पर जो कृपा थी उसको दृष्टिगत रखते हुए यह बात कही है।

मैंने न तो ईसा मसीह अलैहिस्सलाम का अपमान किया और न ही उनके मोजिज़ों (चमत्कारों) से हंसी-ठट्ठा किया बल्कि मेरी समस्त वार्तआलाप का उद्देश्य यह था कि हमें एक पूर्ण धर्म और पूर्ण नबी प्रदान किया गया है और निस्सन्देह हम ही सर्वश्रेष्ठ उम्मत हैं जो लोगों के लाभार्थ पैदा की गई है। अत: कितने ही गुण हैं जो वास्तविक रूप से नबियों में पाए जाते हैं और यह गुण उससे श्रेष्ठ और उत्तम शक्ल में प्रतिरूप के तौर पर हमें प्राप्त हैं। और यह अल्लाह की कृपा है वह जिसे चाहता है प्रदान कर देता है। क्या तू अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन पर विचार नहीं करता। जब आप ने फ़रमाया: कि जन्नत में एक घर है जिस तक केवल एक ही व्यक्ति पहुंचेगा और मैं आशा रखता हूं कि वह मैं ही हूंगा। यह बात सुनकर एक व्यक्ति रो पड़ा और आपसे निवेदन किया कि: हे अल्लाह के रसूल! मैं आपकी जुदाई सहन नहीं कर सकूंगा और मुझसे यह नहीं हो सकेगा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी अन्य स्थान पर हों और मैं आप से दूर किसी अन्य स्थान पर, आप के पवित्र मुख के दीदार से वंचित रहूं। इस पर अल्लाह के रसूल ने उससे कहा कि तुम मेरे साथ और मेरे ही घर में होगे। अत: देख कि किस प्रकार (अल्लाह ने) उसे उन नबियों पर श्रेष्ठता दे दी जो उस घर को नहीं पा सकेंगे। फिर अल्लाह के इस कथन और दुआ को भी सामने रख जो उसने हमें सिखाई अर्थात-

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ (फ़ातिहा- 1/6,7)

(अर्थात- हमें सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनाम किया)

अत: हमें यह आदेश दिया गया है कि हम समस्त नबियों का अनुसरण करें और अल्लाह से उन

नबियों के गुण मांगें। और जबकि नबियों के विशेषण विभिन्न भागों के समान हैं और हमें यह आदेश दिया गया है कि हम उन सब गुणों की मांग करें और उन समस्त भागों के संग्रह को अपने अंदर इकट्ठा करें तो यह अनिवार्य है कि हमें प्रतिरूप के तौर पर तथा रसूलल्लाह के अनुसरण में वह चीज़ प्राप्त हो जाए जो अन्य नबियों को अकेले-अकेले प्राप्त नहीं हुई। और इस्लाम के उलमा इस बात पर सहमत हैं कि कभी कोई जुज़वी (आंशिक) प्रतिष्ठा ग़ैर नबी में ऐसी भी पाई जाती है जो नबी में नहीं पाई जाती। फिर तू इब्ने सीरीन के कथन पर विचार कर कि जब उनसे महदी के मरतबे के बारे में प्रश्न किया गया और पूछा गया कि क्या वह अपने गुणों में अबू बकर[रज़ि०] के समान होगा? तो उन्होंने फ़रमाया:- बल्कि वह कुछ नबियों से भी श्रेष्ठ होगा। इस उम्मत के उलमा में से किन्हीं दो ने भी इस बात में मतभेद नहीं किया कि वह प्रतिरूपी विशेषताएं जो इस उम्मत में पाई जाती हैं वह कभी-कभी उन कुछ प्रतिष्ठाओं पर प्राथमिकता ले जाती हैं जो अन्य नबियों में मूल रूप से पाई जाती हैं। इसीलिए कहा गया है कि पूर्व नबी इस उम्मत को रश्क की निगाह से देखते थे और उनमें से बहुतों से यह इच्छा की कि वे इस उम्मत में से हो जाएं। अत: यदि इस उम्मत में कुछ ऐसे विशेष गुण न होते जो बनी इस्राईल के नबियों में मौजूद नहीं थे तो उन्होंने अपने रब्ब से यह मांग क्यों की कि उन्हें इस उम्मत में से बना दे। जहां तक मसीह के कुछ चमत्कारों को नापसंद करने की बात है तो यह सही है। हम उन मामलों को कैसे पसंद कर सकते हैं जो हमारी शरीयत में हलाल नहीं हैं। उदाहरणस्वरूप इंजील यूहन्ना के दूसरे अध्याय में है कि ईसा अलैहिस्सलाम को आपकी मां के साथ एक शादी में बुलाया गया और आप ने (वहां) एक बर्तन के पानी को शराब बना दिया ताकि लोग उसमें से पिएं। अत: तू विचार कर कि हम इस प्रकार के चमत्कारों को नापसंद क्यों न करें क्योंकि न तो हम शराब पीते हैं और न ही हम उसे कोई पवित्र चीज़ समझते हैं, अत: हम इस प्रकार के चमत्कारों पर कैसे राज़ी हो जाएं। और कितने ही ऐसे मामले हैं जो नबियों की सुन्नत में से हैं परन्तु हम उन्हें नापसंद करते हैं और उन पर राज़ी नहीं होते। आदम अलैहिस्सलाम अपनी बेटी की शादी अपने बेटे से कर देते थे परन्तु हम अपने इस ज़माने में इस काम को अच्छा और पवित्र नहीं समझते बल्कि हम उसे नापसंद करते हैं। अत: हर समय का अलग आदेश और हर उम्मत की अलग कार्यपद्धति होती है और इसी प्रकार हमें यह नापसंद है कि हमारे लिए पक्षी पैदा करने का चमत्कार हो। क्योंकि अल्लाह ने हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह चमत्कार प्रदान नहीं किया और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बड़ा पक्षी पैदा करना तो दूर एक मक्खी भी पैदा नहीं की और उसमें भेद एकेश्वरवाद को बढ़ावा देना और लोगों को हर खतरे की जगह से बचाना था बल्कि कभी (इस प्रकार का चमत्कार) शिर्क के बीज की तरह हो जाता है। हमारी किताब में हमारा उद्देश्य यही था और कर्मों का दारोमदार निय्यतों पर होता है। अत: तू थोड़ी देर के लिए सोच विचार कर, संभवत: अल्लाह तुझे सत्यापन करने वालों में से बना दे। {हमामतुल बुश्रा (हिन्दी) पृष्ठ- 174-176}

☆ ☆ ☆

सिलसिला अहमदिया (अर्थात अहमदियत का परिचय) जिल्द-1

(लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब M.A.)

(भाग-30) अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

दूसरा बड़ा कारण वह निशान और चमत्कार थे जो आपको ख़ुदा तआला ने प्रदान किए थे जिन का प्रभाव भी चुंबकीय आकर्षण की शक्ति से कम नहीं था और आपके निशान कुछ प्रकारों पर बंटे हुए थे।

(1) निशानों का पहला प्रकार वे भविष्यवाणियां थीं जो आप ख़ुदा से ज्ञान प्राप्ति के बाद करते थे जिनमें मित्रों और शत्रुओं और लोगों और क़ौमों सब के बारे में भविष्य की खबरें होती थी जो अपने समय पर पूरी हो कर लोगों के दिलों में ईमान उत्पन्न करती थी और आप की भविष्यवाणियों में ज्ञान और कुदरत दोनों का प्रदर्शन होता था क्योंकि यही वे दो स्तंभ हैं जिन पर ख़ुदा की हुकूमत स्थापित है परंतु भविष्यवाणियों के बारे में आप यह व्याख्या किया करते थे कि इनसे सामान्य तौर पर ऐसी परिस्थिति उत्पन्न नहीं होती जिसे दिन की तेज़ रोशनी से समानता दे सकें क्योंकि यदि ऐसा हो तो ईमान का कोई लाभ नहीं रहता और न कोई व्यक्ति सवाब का पात्र बन सकता है। अत: आप फ़रमाते थे कि चमत्कारों से केवल इस सीमा तक प्रकाश उत्पन्न होता है जिसे बादलों वाली चांदनी रात की रोशनी से समानता दे सकते हैं जिसमें देखने वाले तो रास्ता देख लेते हैं परंतु कमज़ोर दृष्टि वालों के लिए संदेह का भी स्थान रहता है। आपकी जमाअत के हज़ारों लोगों ने भविष्यवाणियों का निशान देख कर आपको स्वीकार किया।

(2) निशानों का दूसरा प्रकार दुआ के उदाहरण हैं। आप का यह दावा था कि क्योंकि अल्लाह तआला ने आपको दुनिया के सुधार के लिए प्रेरित किया है इसलिए वह आपकी दुआओं को विशेष रूप से सुनता है और उन्हें स्वीकार्यता का दर्जा प्रदान करता है परंतु आप ने यह व्याख्या की कि दुआओं की स्वीकार्यता से यह भाव नहीं कि हर दुआ हर हाल में सुनी जाती है अपितु इस मामले में बंदे के साथ ख़ुदा का व्यवहार मित्रता पूर्ण होता है कि वह अधिकतर तुम्हें सुनता और मानता है परंतु कई बार अपनी भी मनवाता है और इस बात की परीक्षा करना चाहता है कि उसका बंदा उसकी बात को कहां तक प्रसन्नता और खुले दिल के साथ स्वीकार करता है फिर भी बहुत से लोगों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दुआओं की स्वीकार्यता के निशान से पहचाना क्योंकि कई बार ऐसा होता था कि लोग किसी मुसीबत या कष्ट के समय में आपको दुआ के लिए लिखते थे और जो प्रत्यक्ष रूप से परिस्थितियां थी उसमें सफलता नज़र नहीं आती थी परंतु आपकी दुआ से ख़ुदा सफलता प्रदान करता था या आपकी बद्दुआ से दुश्मनों को हलाक करता था।

(3) निशानों का तीसरा प्रकार ख़ुदाई सहायता है जो कुल मिलाकर हर एक सच्चे के समर्थन में कार्य करती हुई नज़र आती है। इस दलील से भी बहुत से लोगों ने आप को माना क्योंकि वे देखते थे कि यह एक अकेला व्यक्ति उठा है जो बिल्कुल खाली हाथ है परंतु फिर भी ख़ुदा प्रत्येक मैदान में उसे सफलता प्रदान करता है और उसके विरोधी बावजूद प्रत्येक प्रकार के साधनों के होते हुए और बावजूद अपनी अधिकता के उसके सामने अपमानित और पराजित हो जाते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

कभी नुसरत नहीं मिलती दर ए मौला से गंदों को
कभी ज़ाए नहीं करता वह अपने नेक बंदों को

(4) निशानों का चौथा प्रकार वे स्वप्न इत्यादि थे जो दूसरे लोगों को आप के सत्यापन के बारे में आए और इस माध्यम से भी हज़ारों लोगों ने आपको माना। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में बड़ी अधिकता से लोगों को इस प्रकार के स्वप्न आते थे या कई बार इल्हाम भी होता था जिनमें यह बताया जाता था कि आप सच्चे और ख़ुदा की ओर से हैं यहां तक कि कुछ स्वप्न विरोधियों को भी आए जिनमें से कुछ ने तो अपने विरोध को छोड़ दिया और आपके अनुयायी हो गए परंतु कुछ स्वप्न की ताबीर अर्थात उसका अर्थ समझने मैं ग़लती कर के विरोध पर अडिग रहे।

तीसरा बड़ा कारण आपकी कामयाबी का वे दलीलें और तर्क थे जो आप ने अपने सत्यापन में प्रस्तुत किए जो तार्किक और बौधिक दोनों रूप के थे। ये दलीलें ऐसी ज़बरदस्त थीं कि कोई घृणा रहित बुद्धिमान व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बग़ैर नहीं रह सकता। आप ने क़ुरआन से, हदीस से, दूसरे धर्मों के कथनों से, इतिहास से और ख़ुदा की दी हुई अक़्ल से अपने समर्थन में दलीलों की ऐसी इमारत खड़ी कर दी कि लोग उसे देख-देख कर सहम जाते थे और उत्तर का सामर्थ्य नहीं रखते थे। बेशक आपके मुक़ाबिल पर आपके मुख़ालिफ़ीन भी ख़ामोश नहीं थे और वह भी अपनी तरफ़ से बाअज़ कमज़ोर हदीसें या बाअज़ द्विअर्थीय और अस्पष्ट क़ुरआनी आयात पेश करते थे और सलफ़ सालिह के कथनों का एक हिस्सा भी उन के हाथ में था मगर इस रेत के ढेर को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़िला से कोई समानता नहीं थी और अक़्लमंद लोग इस फ़र्क़ को देखते और इस से फ़ायदा उठाते थे।

चौथा बड़ा कारण वह दिलकश और ख़ूबसूरत तस्वीर थी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की पेश की जो हर समझदार व्यक्ति के दिल को मोह लेती थी और इस के मुक़ाबिल पर इस्लाम का जो नक़्शा ग़ैर अहमदी उल्मा पेश करते थे वह अपने अंदर कोई ख़ास आकर्षण नहीं रखता था। आप ने न सिर्फ इस्लाम के चेहरा से इस की सदीयों की मैल को धोया बल्कि क़ुरआन शरीफ़ से वह वह मआरिफ़ निकाल कर दुनिया के सामने पेश किए कि दुश्मन भी पुकार उठा कि इस्लाम की ये तस्वीर निहायत ख़ूबसूरत और दिलकश है और इस सूरत-ए-हाल ने निस्संदेह लोगों को आपकी तरफ़ खींचा। (पृष्ठ 103 तक)

पांचवा बड़ा कारण आपका वह जिहाद था जो आप इस्लाम की सेवा में दिन रात कर रहे थे आपकी यह प्रेम पूर्वक सेवा बड़े से बड़े शत्रु की जबान से भी यह शब्द निकलती थी कि यह व्यक्ति इस्लाम का बेनज़ीर फिदाई और उसका बहुत बड़ा आशिक है जिसे दिन-रात इस्लाम की सेवा के अतिरिक्त कोई विचार नहीं इस हालत को देख कर समझदार लोग एक गहरी सोच में पड़ जाते थे। एक और तो मिर्ज़ा साहब उलेमा की नज़र में काफिर और अधर्मी है और दूसरी और उन्हें इस्लाम का इतना दर्द है कि अधर्मी कहने वाले तो पड़े सोते हैं परंतु मिर्ज़ा साहब हर प्रकार के आराम को अपने ऊपर हराम करके इस्लाम की सेवा में लगे हुए हैं इस पर जो लोग सदप्रवृत्ति थे वह मजबूर होकर आपकी ओर खिंचे आते थे। (सिलसिला अहमदिया, पृष्ठ 102-103) शेष...

☆ ☆ ☆

वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है (4)

लेखक - आसिफ महमूद बासित साहिब **(भाग – 22)** अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

2008 में ख़िलाफ़त जोबली के सिलसिले में एम-टी-ए ने अन्तर्राष्ट्रीय मुशायरे (कवि सम्मेलन) का आयोजन किया। पाकिस्तान, अमेरिका, केनेडा से मेहमान कवियों को निमंत्रण दिया गया था। इस समय तक विनीत भी मुशायरा पढ़ लिया करता था। उस समय के चेयरमैन सैयद नसीर शाह साहब ने हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर इस सभा में सम्मिलित हो कर सभा की शोभा बढ़ाएं। तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि आप लोग करें मैं आ सका तो आ जाऊंगा। जलसे के दिन से कुछ पहले की बात थी हुज़ूर के दिन के 24 घंटे पहले ही निर्धारित होते हैं। जलसे के दिनों में कई गुना अधिक व्यस्तता भी उन्हीं 24 घंटों में निरंतर चली जाती है। हुज़ूर अनवर मुशायरे में नहीं आए यद्यपि हम सभी समझते तो थे कि व्यस्तता की क्या अवस्था है परंतु आशा छोटी सी क्यों न हो उसके पूरा न होने का दुख तो इंसान को होता ही है। और वह भी यदि बात हो हुज़ूर के दीदार और आप की मुबारक सभा से लाभान्वित होने की हो।

अगले दिन विनीत एम-टी-ए के कार्यालय में बैठा हुआ था कि अचानक हुज़ूर अनवर तशरीफ ले आए। फरमाया कि : "कल मुशाएरे में तुमने भी कुछ पढ़ा था ?" विनीत ने कहा जी हुज़ूर, कुछ अशआर पढ़े थे। "क्या अशआर पढ़े थे?" यह कहते हुए हुज़ूर अनवर दफ्तर की कुर्सियों में से एक कुर्सी पर बैठ गए। मुझे सामान्य रूप से तो अपने अशआर याद रहा करते हैं परंतु इस समय ज़ेहन बिलकुल खाली पाया। जेबें टटोलनी शुरू की वे भी खाली थी, दराज़ खोल खोल कर उन में झांकता रहा, फिर अपनी बैग की जेबें देखीं तो वहां वह काग़ज़ मिल गया जिस पर वह अशआर दर्ज थे। फरमाया सुनाओ क्या पढ़ा था। विनीत ने अशआर प्रस्तुत किए। फरमाया चलो कल मुशायरे में तो नहीं आया अलबत्ता तुम्हारे शे'अर सुन लिए हैं। प्रसन्नता की यह अवस्था थी जो अवस्था थी वह वर्णन करना कठिन है। सामान्य से अशआर थे परंतु अल्लाह तआला नवाज़ता है तो बिना हिसाब के नवाज़ देता है। हुज़ूर की कृपा का भी अजीब हाल है यहां भी वही बिना हिसाब नवाज़ने और बेहिसाब नवाज़ने वाली अवस्था ही होती है। अभी इस प्रसन्नता को समेट रहा था कि हुज़ूर के सामने हमारे एक मित्र की मेज़ थी। दृष्टि उसके नीचे कहीं ठहरी नज़र आई। मैंने भी वहां देखा तो वहां उनके प्रिंटर के पीछे चाय के कुछ Chronic प्रकार के निशान थे। फ़रमाया उन्हें कहना चाहिए कि निशान तो साफ कर लें अर्थात ऐसे में भी हुज़ूर की मुबारक दृष्टि उस सूक्ष्म कोने में पहुंची जो सामान्य दृष्टि से छुपा था शायद यह धब्बे रह भी इसलिए गए थे। परंतु हुज़ूर की दृष्टि वहां भी पहुंची और बड़े प्रेमपूर्वक सुधार भी कर दिया यद्यपि कि हुज़ूर के आने का विचार रहता था परंतु अलहमदुलिल्ला यों सफाई का ख्याल रखने की आदत पड़ गई (यद्यपि अभी बहुत गुंजाइश बाकी है)।

हुज़ूर के एम-टी-ए में पधारने की बात चल रही है तो एक और घटना याद आई। एक दिन सुबह दस बजे के निकट दफ्तर पहुंचा तो ट्रांसमिशन के विभाग में काफी उथल-पुथल दिखाई दी। ज्ञात हुआ कि आज

सुबह फज्र की नमाज़ से कुछ देर बाद हुज़ूर एम-टी-ए तशरीफ़ लाए थे उस समय ड्यूटी पर एक साहिब मौजूद थे। क्योंकि एम-टी-ए पर प्रकाशित होने वाले समस्त प्रोग्राम शेड्यूल के अनुसार Automated तरीके पर चलते रहते हैं। कंप्यूटर स्वयं ही एक प्रोग्राम समाप्त हो जाने के बाद अगला प्रोग्राम आरंभ कर देता है। यों ड्यूटी पर मौजूद साहब इस संतुष्टि में अपनी ड्यूटी दे रहे थे कि हुज़ूर अनवर पधारे और पूछा कि अभी कुछ देर पहले कुछ सेकंड के लिए एम-टी-ए के प्रसारण में रुकावट आई खाली स्क्रीन आ रही थी और कोई आवाज़ न थी। क्या हुआ था? परंतु उन साहिब ने अज्ञानता का प्रदर्शन किया। उन्होंने उस समय कारण खोजने का प्रयास किया परंतु उन्हें मालूम न हो सका। हुज़ूर तो चले गए परंतु उन साहब ने अपने विभाग के निगरान को फोन किया। विभाग की निगरा ने चेयरमैन साहब को फोन किया और इस प्रकार एक आपातकालीन अवस्था उत्पन्न हो गई। क्या समस्या थी क्यों हुआ था कैसे हुआ था समस्त जानकारी प्राप्त करके हुज़ूर अनवर की सेवा में भिजवा दी गई। हुज़ूर ने फरमाया कि ट्रांसमिशन विभाग की निगरानी कुछ दिन सुबह शाम रात एम-टी-ए में बिताएंगे। एम-टी-ए ही में निवास होगा और हर समय नज़र रखेंगे कि प्रसारण में इस प्रकार की रुकावट न आए। उनके रहने की अवधि कोई 2 महीने पर तक चली गई और इस कुछ समय की रुकावट के अंदेशे का अच्छे प्रकार से विचार किया गया और आगे के लिए ऐसे-ऐसे रुकावटें को समाप्त किया गया बताना यह उद्देश्य था कि एम-टी-ए पर होने वाली इस कुछ मिनटों की रुकावट को केवल और केवल हुज़ूर अनवर ने देखा और इस पर कठोर नोट लिए। जो ज़िम्मेदार थे वह भी बेखबर थे परंतु हुज़ूर अनवर ने उसी समय एम-टी-ए लगाया जिस समय यह घटना होनी थी। इसे हुज़ूर अनवर की नज़र में एम-टी-ए का जो महत्व है वह भी समझ आता है। इस दौर में अल्लाह तआला ने हमें एम-टी-ए के रूप में एक बहुमूल्य वरदान दिया है जो सारी जमाअत को ख़लीफ़ा-ए-वक्त से संपर्क में रखे हुए है। हुज़ूर का एम-टी-ए के लिए यह ध्यान और प्रेम वास्तविक रूप से प्रेम की निशानी है जो हुज़ूर के दिल में जमाअत के लिए भरा हुआ है। हर वक्त का संपर्क जमाअत से कुछ मिनटों के लिए भी क्यों टूटे। अब इस संपर्क का टूटना जमाअत के लिए स्वीकार योग्य नहीं नहीं ख़लीफ़ा वक्त के लिए। (पृष्ठ 8-10)

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

महिलाएं और इस्लाम

"और उन स्त्रियों का विधि के अनुसार उतना ही अधिकार है जितना पुरुषों का"

(पवित्र क़ुर्आन- 2:229)

''जो भी पुण्यकर्म करेगा चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष बशर्ते कि वह ईमानदार (मोमिन) हो तो निस्सन्देह हम उसे पवित्र जीवन प्रदान करेंगे और उनका प्रतिफ़ल उनके उन अति उत्तम कर्मों के अनुसार उन्हें देंगे जो वे करते रहे।''

(पवित्र क़ुर्आन- 16:98)

मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन

(हज़रत मौलवी नूरुद्दीन[रज़ि] ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम की जीवनी)

(भाग- 30) अनुवादक - फ़रहत अहमद आचार्य

वह नौजवान अपने घर के सामने एक कुर्सी पर बैठा हुआ था वहां एक बगीचा भी था वहीं हमारे लिए कुर्सियां मंगवाई गईं। मैंने उसका हाल पूछ कर कहा कि केले की जड़ का एक छटांक पानी साफ करके उसमें यह शोरह कलमी जो आपके बरामदे में बारूद के लिए रखा है, मिलाकर कई बार पीओ और शाम तक मुझे सूचित करें। मैं कह कर चला आया और ख़ुदा की कुदरत से उसको शाम तक काफी आराम मिल गया उसने मुझे एक बहुत कीमती वस्त्र और इतना रुपया दिया कि मुझ पर हज करना फर्ज हो गया। साथ ही यह बात हुई कि मुझे बुखार की अधिकता में मुख से अत्यधिक लार निकालनी शुरू हो गई जिसमें पानी दुर्गंध युक्त काले रंग का निकलता है। एक व्यक्ति हकीम फरज़ंद अली ने मुझे परामर्श दिया कि आपका देश यदि निकट हो तो जल्दी चले जाएं इस बीमारी से बचने की कोई उम्मीद नहीं। शाम के समय एक बुज़ुर्ग जो वहां विद्यार्थियों के प्रबंधक थे और बहुत ही निष्ठावान थे आए और कहने लगे मैं बूढ़ा हूं और मेरे मुंह से लार बहुत निकलती है। कोई ऐसी चीज़ बताओ जो इफ्तार (शाम) के समय खा लिया करूँ मैंने कहा मुरब्बा आमला बनारसी, दाना इलायची, वर्कतला से इफ्तार करें। वह यह नुस्खा पूछ कर चले गए और तुरंत वापस आए और एक मरतबान मुरब्बा और बहुत सी इलायचियाँ और दफ्तरी वर्कतला मेरे सामने लाकर रख दी और कहा आपके मुंह से भी लार आती है आप भी खाएं मैंने उनको खाना शुरू किया। एक आध घंटे के खाने से कुछ आराम मिला जब फिर पानी आना शुरू हुआ तो एक और खा लिया। अत: मुझे याद नहीं कि कितना खा गया, रात तक मुझे बहुत आराम हो गया और मैंने बजाए अपने देश जाने के मक्का मदीना जाने का इरादा कर लिया।

मैं जब भोपाल से रुखसत होने लगा तो मैं अपने उस्ताद मौलवी अब्दुल कय्यूम साहब की सेवा में मुलाकात के लिए उपस्थित हुआ सैकड़ों आदमी अलविदा कहने के लिए मेरे साथ थे जिनमें अक्सर उलमा और सम्मानित स्तर के लोग थे। मैंने मौलवी साहब से निवेदन किया कि मुझको कोई ऐसी बात बताएं जिससे मैं हमेशा खुश रहूँ। फरमाया: कि ख़ुदा न बनना और रसूल न बनना। मैंने निवेदन किया कि हज़रत यह बात मेरी समझ में नहीं आई और यह बड़े-बड़े उलमा मौजूद हैं संभवत: यह भी न समझे होंगे। सब ने कहा हां हम भी नहीं समझे। मौलवी साहब ने फरमाया कि तुम ख़ुदा किसको कहते हो मेरे मुंह से निकला कि ख़ुदा की एक सिफत है कि जो चाहता है करता है फरमाया कि बस हमारा मतलब इसी से है यानी तुम्हारी कोई इच्छा हो और वह पूरी न हो तो तुम अपने दिल से कहो कि मियां तुम कोई ख़ुदा थोड़ी हो। रसूल के पास अल्लाह तआला की तरफ से हुकुम आता है वह विश्वास रखता है कि उसकी आज्ञा से लोग नरक में जाएंगे इसलिए उसको बहुत कष्ट होता है तुम्हारा फतवा यदि कोई न माने तो वास्तविक नर्क थोड़ी हो सकता है। अत: तुमको इसका भी अफसोस नहीं होना चाहिए। हज़रत मौलवी साहब के इस बिंदु से अब तक मुझे

बड़ा आराम पहुंचा है अल्लाह तआला उनको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

हरमैन शरीफ (मक्का-मदीना) के लिए सफ़र

मुझको इस बुखार ने जो भोपाल में आता था भोपाल से जुदा होने के बाद भी सफ़र में नहीं छोड़ा मगर उस का ये क़ायदा था कि पंद्रह दिन के बाद सिर्फ एक दिन के लिए हुआ करता था रस्ता में बुरहानपुरा स्टेशन पर मैं उतरा, जब शहर में गया तो एक आदमी मौलवी अब्दुल्लाह नामक मुझको मिले उन्होंने मेरी बड़ी ख़ातिर तवाज़ों की और कहा कि मैं तुम्हारे बाप का दोस्त हूँ जब मैं रुख़स्त हुआ तो उन्होंने मुझको मिठाई की एक टोकरी दी। जब रास्ते में टोकरी खोली तो उस में एक हज़ार रुपया की हण्डी मक्का मुअज़्ज़मा के एक साहूकार के नाम थी और कुछ नक़द रुपया भी था। उस हण्डी में लिखा था कि नूरुद्दीन को एक हज़ार रुपया तक जब वह मांगें दे दो और हमारे हिसाब में लिख लेना, उस के हौसला को देखकर मुझे ताज्जुब हुआ यद्यपि मैंने वह एक हज़ार रुपया वसूल नहीं किया मगर उनके हौसला की दाद देनी ज़रूरी है। उन मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ने बयान किया कि मैं साहेवाल ज़िला शाहपुर का निवासी हूँ मैं मक्का मुअज़्ज़मा में हज को गया उस ज़माने में मैं बहुत ही ग़रीब था मक्का मुअज़्ज़मा में सुबह से शाम तक "लुकमतुन लिल्लाह, मिस्कीन" (अर्थात असहाय हूँ कोई एक लुकमा दे दो) पुकार कर भीख मांगता था। फिर भी सही से पेट नहीं भरता था और तमाम दिन बाज़ारों गली कूचों में फिरता रहता था। एक दिन मेरे दिल में ख़्याल आया कि तू अगर कभी बीमार हो जाये और इतना अधिक न चल सके तो भूक के मारे मर जाएगा। इस तहरीक के बाद मैंने इरादा किया कि बस आज ही मर जाऐंगे और अब भीख न मांगेंगे। फिर मैं खाना काबा में गया और पर्दा पकड़ कर यूं इक़रार किया कि : "हे मेरे मौला यद्यपि तू इस वक़्त मेरे सामने नहीं मगर में इस मस्जिद का पर्दा पकड़ कर वादा करता हूँ कि किसी इंसान और किसी मख़लूक़ से अब नहीं माँगूँगा" ये वादा करके पीछे हट कर बैठ गया इतने में एक शख़्स आया उसने मेरे हाथ पर डेढ़ आना के पैसे (अंग्रेज़ी सिक्के) रख दिए। अब मेरे दिल में ये शक हुआ कि मेरी शक्ल भिखारी की सी है यद्यपि मैंने ज़बान से नहीं मांगा, इसलिए मेरे लिए ये पैसे जायज़ हैं या नहीं मैं ये सोचने लगा और वह व्यक्ति इतने में ग़ायब हो गया। मैंने वहां से उठकर दो पैसे की रोटी खा ली और चार पैसे की माचिस ख़रीद लीं जो बारह डिब्बियां मिलीं। चूँकि मुझको गली कूचों में दिन-भर चलने की आदत तो थी ही, इन माचिसों को हाथ में लेकर किबरीयत-किबरीयत कहता फिरता था। थोड़ी देर में वह छः पैसे की बिक गईं। फिर मैंने छः पैसे की खरीदीं वह भी इसी तरह बेच दीं। आख़िर शाम तक मेरे पास एक चवन्नी हो गई दो पैसे की रोटी खा कर रात को सो गया। दूसरे दिन फिर माचिस खरीदीं और इसी तरह बेचीं। कुछ दिन के बाद वह इतनी हो गईं कि जिनके उठाने में दिक्कत होती थी आख़िर मैंने वह चीज़ें जिनकी औरतों को ज़रूरत होती है खरीदीं और गठरी कमर से लगा कर फिरने लगा मगर सौदा ऐसा ख़रीदता था और मुनाफा इतना कम लेता था कि शाम तक सब बिक जाएं। रात को बिलकुल फ़ारिग़ हो कर सोता था कुछ दिनों बाद एक चादर बिछा कर इस पर सौदा रख कर बेचने लगा। फ़िर कुछ दिन बाद इतनी तरक्की हो गई कि मैंने आधी दुकान किराए पर ले ली। फिर और तरक्की हुई कि मैं मुंबई आ गया। (पृष्ठ 106-108) **शेष.....**

सामान्य ज्ञान

1. विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय ?

उत्तर - तक्षशिला विश्वविद्यालय।

2. विश्व का सबसे बड़ा द्वीपसमूह ?

उत्तर - इंडोनेशिया।

3. विश्व का प्रथम कागजी मुद्रा जारी करने वाला देश ?

उत्तर - चीन

4. विश्व की प्रथम महिला प्रधान मन्त्री ?

उत्तर - एस. भण्डारनायके।

5. विश्व में सबसे बड़ा द्वीप ?

उत्तर - ग्रीनलैंड।

6. विश्व का उच्चतम झरना ?

उत्तर - वेनेजुएला

7. विश्व खाद्य दिवस किस दिन मनाया जाता है ?

उत्तर - 16 अक्टूबर।

8. अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कब मनाया जाता है ?

उत्तर - 8 मार्च।

9. विश्व में कोयला का सबसे बड़ा उत्पादक देश ?

उत्तर - चीन।

10. चाय निर्यात के क्षेत्र में विश्व का अग्रणी देश ?

उत्तर - चीन।

11. महासभा में "शांति के लिए एकता प्रस्ताव" कब स्वीकार किया गया था?

उत्तर - 3 नवंबर 1950

12. भारत में पहली बार "मुस्लिम महिला अधिकार दिवस" किस तारीख को मनाया गया था?

उत्तर – 1 अगस्त

13. भारत के पहले स्वदेशी एयरक्राफ्ट कैरियर का नाम क्या है?

उत्तर – आईएनएस विक्रांत

14. दो ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला कौन हैं?

उत्तर – पी.वी. सिंधु

☆ ☆ ☆

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ
Prop : Sk. Ishaque
FFT Fruits
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO JUICEPAK
Marie
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

R
REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal.com
flipkart.com
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/17129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamat, Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Is Allah not sufficient for His servant
أليس الله بكاف عبده

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone, Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

हदीस: हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत माज़ बिन हबल रज़ियल्लाहु अन्हु से जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको यमन की तरफ़ भेजा, फ़रमाया तुम ऐसी क़ौम के पास जाओगे जो योग्य-ए-किताब हैं जब उनके पास पहुँचो तो उन्हें इस बात की दावत देना कि वे गवाही दें कि अल्लाह तअला के सिवा कोई भी उपास्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं। यदि वे तुम्हारी यह बात मान लें तो फिर उन्हें यह बताओ कि अल्लाह तआला ने उन पर रात-दिन में पाँच नमाज़ें निर्धारित की हैं। यदि वे तुम्हारी यह बात मान लें तो फिर उनको बताओ कि अल्लाह तआला ने उन पर सदक़ा (ज़कात) भी फ़र्ज़ किया है जो उनके मालदारों से लिया जाएगा और उनके मुहताजों को दिया जाएगा। यदि वे तुम्हारी यह बात मान लें तो ख़्याल रखना उनके केवल अच्छे मालों को न लेना और मज़लूम (पीड़ित) की बद्दुआ से बचना क्योंकि उसके और अल्लाह के मध्य कोई रोक नहीं।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताबुज़् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)